बाल कथा सरोवर

खिलौनों का पेड़

3

यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस

बाल कथा सरोवर

भाग 3

(खिलौनों का पेड़)

लेखक

सन्त राम वत्स्य

प्रकाशक

यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस

सैक्टर III, शाप नं० 15

आर० के० पुरम, नई दिल्ली-110022

प्रकाशक :
यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली-110022

© यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस

प्रथम संस्करण, 1974

मूल्य : 2.50 रु०

मुद्रक :
गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस
के-32, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

दो शब्द

'खिलौनों का पेड़' बाल कथा सरोवर की तीसरी पुस्तक है। प्रस्तुत पुस्तक में हमने लोक कथाओं, परी कथाओं, नीती कथाओं, धार्मिक कथाओं और विश्व साहित्य की अमर कथाओं—सभी को स्थान दिया है। बाल मन के विकास क्रम से इसमें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षापूर्ण कहानियाँ सम्मिलित की गई हैं।

भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। बालक इस पुस्तक को अध्यापक की सहायता के बिना भी पढ़ सकेंगे। फिर भी अध्यापक का मार्ग दर्शन तो अपेक्षित है ही।

अन्त में अभ्यासार्थ कुछ प्रश्न दे दिए हैं। ये पाठों को हृदयंगम कराने में सहायक होंगे, ऐसा विश्वास है।

—लेखक

विषय-सूची

पाठ	विषय			पृष्ठ
1.	पूँछ कटा बन्दर	...	...	5
2.	नकली शेर	...	...	9
3.	चूहा और बिल्ली	...	...	13
4.	चिड़िया और कौआ	...	...	18
5.	पढ़े-लिखे मूर्ख	...	...	24
6.	बुरे फँसे	...	...	29
7.	असली राजकुमारी	...	...	35
8.	खिलौनों का पेड़	...	...	41
9.	चालाक गीदड़	...	...	48
10.	लाली	...	...	56
11.	सोई हुई राजकुमारी	...	...	65
12.	बर्फ की देवी	...	...	75

पूँछ-कटा बन्दर

विजय नगर के बाहर एक बाग था। इस बाग में छोटे-बड़े कई पेड़-पौधे थे। फलवाले पेड़ भी थे। अमरूद के, आम के, बेर के, जामुन के, कई पेड़ थे।

इस बाग में बन्दर बहुत थे। उन्हें खाने को फल मिल जाते। पीने को पानी मिल जाता। वे दिन भर उछल-कूद मचाते रहते।

कोई आदमी इस बाग में आराम करने आ जाता तो वे उसके हाथ की चीज़ छीन लेते। छीन कर भाग जाते और पेड़ पर चढ़ जाते। कोई इन्हें पत्थर मारने लगता तो सब इकट्ठे हो जाते। खों-खों कर के डराने लगते। चारों ओर से घेर लेते। बेचारा किसी तरह जान बचाकर वहाँ से भागता।

बन्दरों के दल में एक छोटा बन्दर था। उसका नाम था खों-खों! खों-खों बड़ा नटखट था। वह दिन भर ऊधम मचाता रहता था। फल वाले पेड़ पर चढ़ता तो एक फल खाता और चार फल गिराता। पक्षियों के घोंसलों को उठाकर फेंक देता। वह शरारत करने में सब से आगे रहता।

विजय नगर में एक सेठ था। वह इस बाग में एक मन्दिर बनवाने लगा। कई कारीगर काम करने लगे। कोई छैनी से पत्थर गढ़ता। कोई नींव की चिनाई करता। कोई सामान ढोता।

कारीगर दोपहर को खाना खाने के लिए छुट्टी करते। वे विजय नगर में जाकर खाना खाते। थोड़ी देर आराम भी करते। फिर काम शुरू कर देते।

बढ़ई लकड़ी चीर रहे थे। एक बड़ा शहतीर आधा चिर चुका था। दोपहर का समय हो गया। उन्होंने आधे चिरे हुए शहतीर में एक कीला फँसा दिया। लकड़ी चीरने वालों को इससे काम करने में आसानी होती है। उनका आरा फँसकर अटकता नहीं है। सब कारीगर खाना खाने नगर की ओर चले गए।

नटखट खों-खों पेड़ से कूदकर नीचे उतर आया। वह कारीगरों के औज़ारों को इधर-उधर बिखेरने लगा। वहाँ उसे खाने की कोई चीज़ नहीं मिली।

अब वह अध-चिरे शहतीर पर जा चढ़ा। वह शहतीर में फँसाए कीले को पकड़कर बैठ गया। वह कीले को दोनों हाथों से पकड़कर हिलाने लगा। उसकी पूँछ चिरे हुए शहतीर के बीच आ गई।

दो-चार बार जोर से हिलाने पर कीला ढीला पड़ गया। बन्दर फिर भी उसे दोनों हाथों से पकड़ कर हिलाता रहा, हिलता रहा।

कीला ढीला होकर निकल गया। कीले के निकलने से शहतीर के चिरे हुए भाग आपस में मिल गए। इससे दरार के बीच लटकी हुई बन्दर की पूँछ दब गई। पूँछ के दबने से बन्दर को बड़ा दर्द हुआ।

वह चीखने लगा। सारे बन्दर उसके पास दौड़ आए। नटखट बन्दर पूँछ को खींचने के लिए जितना जोर लगाता, उतना ही ज्यादा दर्द होता। बार-बार खींचने से पूँछ कट गई। कटी जगह से खून बहने

लगा। पूँछ का कटा हुआ भाग शहतीर की दरार में ही फंसा रहा।

जब बढ़ई खाना खाकर लौटे तो वहां खून ही खून पड़ा था।

जब वे शहतीर को चीरने लगे तो वहां कीला नहीं था। कीले के पास नटखट बन्दर की पूँछ फंसी हुई दिखाई दी। बढ़ई समझ गए कि क्या हुआ है।

उनमें जो बड़ा बढ़ई था, वह बोला—जो लोग यों ही दूसरे के काम में, या दूसरे की बात में टांग अड़ाते हैं, उनका यही हाल होता है।

अभ्यास

१. बाग के बन्दर कैसे थे ?

२. 'खों-खों' कैसा बन्दर था ?

३. बाग में सेठ क्या बनवा रहा था ?

४. बन्दर की पूँछ कैसे कटी ?

५. इस कहानी से क्या सीख मिलती है ?

नकली शेर

एक आलसी आदमी था। काम करने को उसका मन नहीं करता था। जब पढ़ने-लिखने की उमर थी, तब पढ़ा-लिखा नहीं। घर से पाठशाला जाता तो रास्ते में खेलने लगता। वह अनपढ़-गंवार ही रहा।

अनपढ़ को अच्छी नौकरी कैसे मिलती। मजदूरी का काम वह करना नहीं चाहता था। भूखों मरने लगा तो भीख माँगने निकला। पर उसे कोई भीख नहीं देता था। सभी कहते, तुम नौजवान हो, भीख क्यों माँगते हो ? कोई काम करो !

उसने भीख माँगने का एक नया तरीका निकाला। वह कहीं से शेर की खाल ले आया। खाल को ओढ़ कर और लम्बी पूँछ लगाकर वह गली-गली घूमने लगा। उसने एक ढोल वाले को साथ मिला लिया। ढोल वाला ढोल बजाता। लोग घरों से बाहर निकल कर देखने लगते। शेर बना हुआ आदमी उनसे पैसे माँगता।

छोटे बच्चों का झुंड इस नकली शेर के पीछे-पीछे चल पड़ता। यह नकली शेर अपनी लम्बी पूँछ को

घुमाता, नाचता-कूदता गली-गली घूमता रहता। इस तरह उसे खूब भीख मिलने लगी।

एक दिन वह एक बड़े बंगले में जा घुसा। ढोल पीटने वाला भी साथ था। छोटे बच्चों का झुंड भी शोर मचाता साथ चल रहा था।

सबसे आगे तो यह नकली शेर ही था। इतने में एक मजेदार घटना घटी। बंगले में झबरे बालों वाला एक बड़ा कटखना

कुत्ता था। ढोल-ढमाके और शोर से वह जाग गया। जब उसने शेर की खाल वाले इस आदमी को देखा तो ज़ोर से भौंकने लगा। और उस पर जा झपटा।

अब नकली शेर आगे और कुत्ता पीछे। घबराहट में नकली शेर की खाल गिर पड़ी। पर वह आदमी रुका नहीं। आगे काँटों वाली तार लगी हुई थी। उसमें जा फंसा। उसका शरीर काँटों से छिल गया। खून बहने लगा।

उधर कुत्ता शेर की खाल को सूँघने लगा था। वह उसे फाड़ने लगा।

ढोल बजाने वाला पहले ही भाग कर बंगले से बाहर निकल गया था। बच्चों की भीड़ बंगले से बाहर

खड़ी तालियाँ पीट-पीट कर हंस रही थी।

नकली शेर हाँफता हुआ किसी तरह बंगले से बाहर पहुँचा। उसे देखकर बच्चे उसकी हँसी उड़ाने लगे। वे शोर मचाने लगे—"देखो लोगो, शेर कुत्ते से हार गया।"

नकली, नकली ही होता है और असली, असली ही।

'नकली' भले बड़ा बन जाए।
'असली, छोटे से घबराए॥

अभ्यास

१. वह आदमी भीख क्यों माँगता था ?
२. उसका भीख माँगने का तरीका क्या था ?
३. बड़े बँगले में क्या घटना घटी ?
४. बच्चे तालियाँ क्यों पीट रहे थे ?
५. 'शेर' कुत्ते से कैसे हार गया ?
६. इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो।

चूहा और बिल्ली

विमला के पास एक पेंसिल है। विमला इस पेंसिल से तरह-तरह की तस्वीरें बनाती है। जानवरों की तस्वीरें, पक्षियों की तस्वीरें और गुड्डे-गुड़िया की तस्वीरें बनाती है।

एक रात की बात है। विमला अपनी कापी में तस्वीरें बना रही थी। तस्वीरें बनाते-बनाते उसे नींद आ गई। कापी के ऊपर पेंसिल को रख कर वह सो गई।

एक चूहा इधर-उधर घूम रहा था। उसे भूख लगी हुई थी। वह खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा था। उसने कापी पर रखी पेंसिल उठा ली। वह पेंसिल को अपने पंजों में पकड़ कर कुतरने लगा।

चूहे के तीखे दाँत चुभे तो पेंसिल की चीख निकल गई। वह दर्द के मारे कराहने लगी। वह चूहे से बोली, "मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हारे किस काम आऊँगी? मैं तो बस लकड़ी का एक टुकड़ा हूँ। मुझे खा कर क्या करोगे! न तो तुम्हारी भूख मिटेगी और न तुम्हें मजा आएगा।"

"मैं तुम्हें कुतरूँगा।" चूहा कहने लगा, "इससे मेरे दांतों की खुजली हट जाएगी। लकड़ी की चीज़ें कुतरने में मुझे बड़ा मजा आता है। अच्छा, तो मैं अब तुम्हें कुतरूँगा।" चूहे ने पेंसिल को कुतरना शुरू कर दिया।

पेंसिल को बड़ा दर्द हुआ। वह रोने लगी। उस ने चूहे से हाथ जोड़ कर कहा, "मेरी एक बात मान लो। मुझे एक तस्वीर बना लेने दो। फिर तुम्हारा जो जी चाहे वह करना।"

"अच्छी बात है।" चूहा मान गया। "तुम जल्दी-जल्दी तस्वीर बना लो। मुझे देर हो रही है। मुझे और काम भी करना है।"

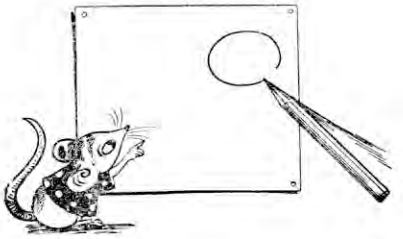

"अभी लो। दो मिनट में बनाती हूँ।" पेंसिल ने कहा। वह तस्वीर बनाने लगी। उसने अण्डे जैसा एक गोला बनाया।

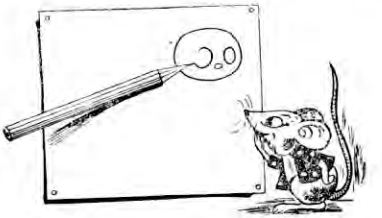

चूहे ने पूछा, "क्या यह अण्डा है?"

"इसे अण्डा ही

समझ लो। पेंसिल ने कहा। और उस गोले के अन्दर तीन छोटे-छोटे गोले और बना दिए।

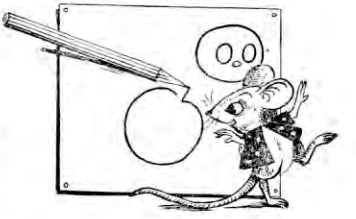

चूहा देखता रहा। पेंसिल तस्वीर बनाती रही। उसने पहले गोले के नीचे एक और गोला बना दिया।

"यह सेब है।" चूहे ने चूँ-चूँ करते हुए कहा।

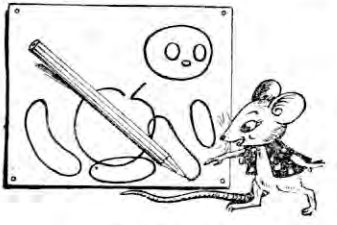

"इसे सेब ही समझ लो।" पेंसिल ने कहा। वह तस्वीर को पूरा करने लगी।

दूसरे गोले के पास उसने कुछ टेढ़ी लकीरें लगाईं।

"अरे वाह! यह तो मूँगफली है!" चूहे ने अपनी जीभ चाटते हुए कहा। "बस, अब जल्दी करो। मुझे अब बहुत भूख लगी है।"

"जरा ठहरो।" पेंसिल ने कहा और पहले गोले पर दो छोटे तिकोन बना दिए।

चूहे ने देखा तो मारे डर के मारे उसके कान खड़े

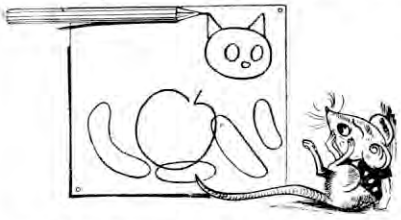

हो गए। वह घबराकर कुछ पीछे हट गया।

"अरी, बस भी करो! यह क्या कर रही हो। यह तो तुमने बिल्ली जैसा कुछ बना दिया। बस-बस, आगे मत बनाओ।" चूहे ने और भी पीछे हटते हुए कहा।

पर पेंसिल नहीं रुकी। वह चुपचाप तस्वीर बनाती रही। उसने बिल्ली की पूरी तस्वीर बना डाली।

इस बिल्ली को देखकर चूहा डर के मारे चिल्ला उठा, "अरे, यह तो सचमुच बिल्ली है।" और वह भाग खड़ा हुआ। वह अपने बिल में घुस गया।

इस तरह पेंसिल ने चूहे से अपनी जान बचाई।

अच्छा, अब तुम भी कोशिश करो। क्या तुम भी ऐसी बिल्ली बना सकते हो, जिसे देखकर चूहे भाग जाएँ?

अभ्यास

१. चूहे को पेंसिल कहाँ मिली?

२. चूहे ने पेंसिल को क्या किया?

3. पेंसिल ने चूहे से क्या कहा ?

4. चूहे से बचने के लिए पेंसिल ने क्या किया ?

5. चूहा भागा क्यों ?

6. जिस तरह पेंसिल ने तस्वीर बनाई, तुम भी उसी तरह बिल्ली की तस्वीर बनाओ।

चिड़िया और कौआ

एक थी चिड़िया और एक था कौआ। चिड़िया को मिले मोती, कौए को मिले चने। कौए ने चने के दाने खा लिए। फिर चिड़िया के पास जाकर बोला, "चिड़ी रानी, चिड़ी रानी, जरा अपने मोती तो दिखा।"

चिड़िया बोली, "ना बाबा ना, मैं नहीं दिखाऊँगी तुझे अपने मोती। तुम तो उचक्के हो। दूसरों की

चीजें उठा कर भाग जाते हो। मेरे मोती लेकर तुम फुर्र से उड़ जाओगे।"

कौआ बोला, "नहीं जी, मैं क्यों लूँगा तुम्हारे मोती। मैं जरा देखकर अभी वापस कर दूँगा।"

चिड़िया बेचारी भोली थी। उसने कौए का विश्वास कर लिया। उसने मोती कौए को दे दिए।

मोती मिलते ही कौआ फुर्र से उड़ गया। और डाल पर जा बैठा।

चिड़िया बोली, "कौए-कौए ! मेरे मोती दे।"

कौआ बोला, "नहीं देता, जा।"

तब चिड़िया पेड़ के पास गई और पेड़ से बोली, "पेड़-पेड़ ! इस कौए को गिरा। इसने मेरे मोती छीन लिए हैं।"

पेड़ बोला, "नहीं गिराता, जा।"

तब चिड़िया बढ़ई के पास गई। और बोली, "बढ़ई-बढ़ई ! तू इस पेड़ को काट।"

बढ़ई बोला, "नहीं काटता, जा।"

तब चिड़िया राजा के पास गई और बोली, "राजा-राजा ! बढ़ई को सजा दे।"

राजा बोला, "नहीं देता, जा।"

तब चिड़िया रानी के पास गई और बोली, "रानी-रानी, राजा से रूठ जा।"

रानी बोली, "नहीं रूठती जा।"

तब चिड़िया चूहे के पास गई और बोली, "चूहे-चूहे ! रानी की साड़ी कुतर।"

चूहा बोला, "नहीं कुतरता, जा।"

तब चिड़िया बिल्ली के पास गई और बोली, "बिल्ली-बिल्ली ! चूहे को खा।"

बिल्ली बोली, "नहीं खाती जा।"

तब चिड़िया कुत्ते के पास गई और बोली, "कुत्ते-कुत्ते ! बिल्ली को काट।"

कुत्ता बोला, "नहीं काटता जा।"

तब चिड़िया डंडे के पास गई और बोली, "डंडे-डंडे ! कुत्ते को पीट।"

डंडा बोला, "नहीं पीटता जा।"

तब चिड़िया आग के पास गई और बोली, "आग-आग ! डंडे को जला।"

आग बोली, "नहीं जलाती जा।"

तब चिड़िया पानी के पास गई और बोली, "पानी-पानी ! तू आग को बुझा।"

पानी बोला, "जा-जा, मैं नहीं बुझाऊँगा।"

तब चिड़िया हाथी के पास गई और बोली, "हाथी-हाथी ! तू पानी को सूँड में भरकर बिखेर दे।"

हाथी बोला, "मैं नहीं बिखेरता, जा।"

तब चिड़िया चींटी के पास गई और बोली, "चींटी-चींटी ! तू हाथी की सूँड में घुस जा।"

चींटी बोली, "बहन ! मैं तेरा काम जरूर करूँगी।"

चींटी हाथी की सूँड में घुसने लगी।

तब हाथी बोला, "मेरी सूँड में मत घुसो। मैं पानी को बिखेर दूँगा।"

पानी बोला, "अरे भाई, ऐसा क्यों करते हो। लो, मैं आग को बुझा देता हूँ।"

आग बोली, "छोड़ो जी, झगड़ा क्यों करते हो। मैं ही डंडे को जला डालती हूँ।"

डंडा बोला, "लो जी, मैं कुत्ते की पीट देता हूँ। अब तो प्रसन्न हो न।"

कुत्ता बोला, "मुझे क्यों पीटते हो ! मैं बिल्ली को काटूँगा। अब तो ठीक है न ?"

बिल्ली बोली, "अजी रहने भी दो। मैं चूहे को खाऊँगी।"

चूहा बोला, "जान है तो जहान है। मैं ही रानी की साड़ी को कुतर डालता हूँ।"

रानी बोली, "मेरी साड़ी मत कुतरो। मैं राजा से रूठूँगी।"

राजा बोला, "रानी तुम मत रूठो। मैं बढ़ई को अभी सजा देता हूँ।"

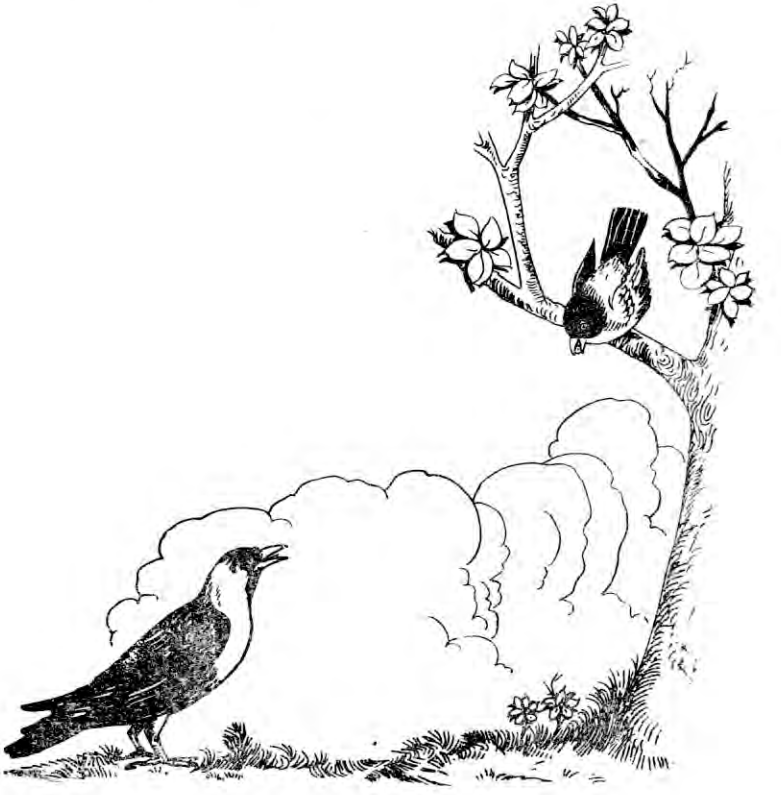

बढ़ई बोला, "मैं पेड़ को काट देता हूँ, बाबा। मुझे सजा मत दो।"

पेड़ बोला, "मैं ही कौए को गिरा देता हूँ। तब तो ठीक है न ?"

अब तो कौए की अकल ठिकाने आ गई। कौआ झट से चिड़िया के पास गया और उसके सारे मोती वापस कर दिए।

चिड़िया तो यही चाहती थी। उसके मोती उसे मिल गए तो सारा झगड़ा मिट गया। वह अपने मोती लेकर फुर्र से उड़ गई।

अभ्यास

1. चिड़िया और कौए में लड़ाई क्यों हुई ?
2. चिड़िया सहायता के लिए किस-किस के पास गई ?
3. पहले सबने चिड़िया की सहायता क्यों नहीं की और दोबारा सबने सहायता क्यों की ?
4. सबसे पहले चिड़िया की सहायता किसने की ?
5. चिड़िया और कौए का झगड़ा कैसे समाप्त हुआ ?

पढ़े-लिखे मूर्ख

एक नगर में चार मित्र रहते थे। इनमें तीन तो पढ़े-लिखे थे किन्तु थे मूर्ख। चौथा अनपढ़ था पर था समझदार।

तीनों पंडितों ने सोचा, "हमारे इतने पढ़े-लिखे होने का लाभ ही क्या! हमें यहाँ तो कोई पूछता नहीं है। कहा भी है :

घर का जोगी जोगड़ा।
और देश की सिद्ध॥

अच्छा यही होगा कि हम किसी दूसरे नगर में जाएँ और वहाँ अपनी विद्या के बल से खूब धन कमाएँ।

यह बात सभी को जँच गई। चारों मित्र तैयार होकर धन कमाने निकल पड़े।

वे नगर से कुछ दूर पहुँचे और आराम करने बैठे तो उनमें जो सबसे बड़ा था, वह बोला, "देखो जी, हम तीन तो खूब पढ़े-लिखे हैं। पर यह हमारा चौथा मित्र बिल्कुल अनपढ़ है। सब जगह पढ़ाई-लिखाई का ही आदर होता है। अनपढ़ आदमी चाहे कितना ही समझदार क्यों न हो, उसे कोई नहीं पूछता है। तो मित्रो, बात यह है कि हम तीन जने तो कमायेंगे और यह अनपढ़ निठल्ला रहकर भी बराबर का हिस्सा लेगा। मैं अभी बता देता हूँ कि मैं तो अपनी कमाई में से इसे फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा। अपनी बात तुम सोच लो।"

दूसरे ने कहा, "तुम ठीक कहते हो। पढ़ाई ही सब कुछ है। बिना पढ़े-लिखे को कौन पूछता है। तो भैया, बुद्धिवन्त, मेरी बात मानो और वापस घर चले जाओ। हम तुम्हें कब तक कमा-कमा कर खिलाते रहेंगे?"

तीसरा बोला, "मुझे आप दोनों की बातें ठीक नहीं लगीं। हम चारों बचपन के मित्र हैं। हम सदा साथ-साथ रहे हैं। बुद्धिवन्त पढ़ा-लिखा न सही। समझदार तो है। हम तीनों को अपनी कमाई में से उसका हिस्सा भी निकालना चाहिए। हमें मित्र के साथ मित्रता निभानी चाहिए।"

समझाने-बुझाने पर वे उस अनपढ़ मित्र को बराबर का हिस्सा देना मान गए।

चारों फिर चल पड़े। चलते-चलते वे एक जंगल में पहुँचे। जंगल में रास्ते के किनारे एक जगह शेर का पंजर और हड्डियाँ पड़ी हुई थीं।

उनमें से एक बोला, "आज हम सीखी हुई विद्या का प्रयोग करके देखेंगे। इससे हमें पता चल जाएगा कि हमारी विद्या सच्ची है झूठी। शेर के इस अंजर-पंजर और हड्डियों को जोड़कर अपनी विद्या के बल से इसे जीवित कर देंगे।"

उनमें से एक ने उसकी बिखरी हुई हड्डियों को जोड़कर पूरा ढाँचा तैयार कर दिया।

दूसरे ने अपनी विद्या के बल से उसमें माँस, खून और चमड़ी पैदा कर दी।

अब तीसरे की बारी थी। उसने कहा, "मैं इसे जीवित कर दूँगा।"

तीसरे की बात सुनकर बुद्धिवन्त बोला, "भैया, मेरी बात मानो और इसे जीवित मत करो। क्योंकि यदि यह जीवित हो गया तो हम सब को मार डालेगा।"

वह बोला, "तुम्हें तो कुछ आता-जाता नहीं। इसीलिए मुझे भी रोक रहे हो। मैं तो अपनी विद्या का चमत्कार जरूर दिखाऊँगा।"

बुद्धिवन्त ने कहा, "तुम्हारी मर्जी, किन्तु मेहरबानी करके थोड़ी देर रुको। मुझे इस ऊँचे वृक्ष पर चढ़ने दो। फिर जो तुम्हारा जी चाहे सो करना।"

बुद्धिवन्त पेड़ पर चढ़ गया। वे तीनों वहीं खड़े रहे। तीसरे ने अपनी विद्या के बल से शेर को जीवित कर दिया।

शेर ने जीवित होते ही उन तीनों को अपने तीखे पंजों से फाड़ डाला।

वे तीनों पढ़े-लिखे मूर्ख अपनी विद्या का प्रयोग करते-करते मारे गए और चौथा अनपढ़ किन्तु समझदार बच गया।

अभ्यास

1. चारों मित्र कैसे थे ?
2. वे दूसरे नगर में क्यों जा रहे थे ?
3. अनपढ़ मित्र को साथ ले जाने का विरोध दो मित्रों ने क्यों किया ?
4. शेर के पंजर और हड्डियों को देखकर मित्रों ने क्या किया ?
5. बुद्धिवन्त ने शेर को जीवित करने से मित्रों को क्यों रोका ?
6. बुद्धिवन्त कैसे बच गया और बाकी कैसे मारे गए ?
7. इस कहानी के आधार पर फैसला करो कि विद्या बड़ी या बुद्धि ?

बुरे फँसे

एक थी लोमड़ी रानी। उसने लगाया बाग। बाग में बोए गाजर और शलजम। वह रोज अपने बाग में जाती। पेट भरकर गाजर और शलजम खाती।

एक दिन वह सबेरे-सबेरे बाग में गई। उसने देखा—गाजर और शलजम के पत्ते इधर-उधर पड़े हैं। कोई रात को आकर चोरी कर गया है।

उसने सोचा—मेरे बाग में कौन चोरी करता है!? मैं इसका पता जरूर लगाऊँगी। फिर उसे चोरी करने का मजा चखाऊँगी।

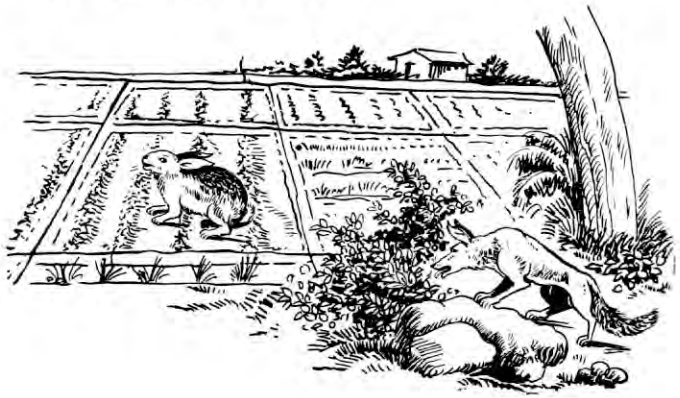

वह रात को बाड़ में छिपकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद फुदकता-फुदकता एक खरगोश आया। उसने पाँच लाल-लाल गाजरें उखाड़ीं। गाजरें तो उसने खा लीं और पत्ते वहीं फेंक दिए। फिर वह छलाँगें मारता बाग से बाहर निकल गया।

लोमड़ी ने मन में कहा, तो यह खरगोश मेरी गाजरें खा जाता है। चोर कहीं का! पर मैं भी लोमड़ी हूँ। ऐसा मज़ा चखाऊँगी कि बच्चू याद करेगा।

लोमड़ी ने एक छोटा-सा पुतला बनाया, फिर उस पुतले को गाढ़े कोलतार से अच्छी तरह पोत दिया। अब वह पुतले को लेकर बाग में पहुँची। क्यारियों के बीच उसने एक कीला गाड़कर उसमें कस कर पुतला बाँध दिया। फिर कुछ दूर खड़ी होकर उसने पुतले को देखा और मुसकराई। साँझ होने लगी थी। वह बाग की बाड़ में छिपकर बैठ गई।

सफेद खरगोश फुदकता-फुदकता खेत में आ गया। फिर वह कान खड़े करके बैठ गया। फिर इधर-उधर देखा। उसने सोचा—आस-पास मुझे देखने वाला कोई नहीं है। वह गाजरों की क्यारी में पहुँचा। वहाँ उसे पुतला दिखाई दिया। उसने सोचा—यह भी कोई

चोर है। गाजरें चुराने आया होगा। चोर-चोर मौसेरे भाई। चलकर इससे दो बातें ही कर लूँ।

वह उछलता-कूदता पुतले के पास चला गया और बोला—"नमस्ते जी।" पर पुतले ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम चुप क्यों हो? बोलते क्यों नहीं?" खरगोश ने पूछा। पुतला फिर भी चुप।

"मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ। पर तुम तो कुछ बोलते ही नहीं हो।" खरगोश ने गुस्से में आकर कहा। पुतला फिर भी चुप।

"अब तो मैं तुम्हें मारूँगा।" और पुतले को उस ने जोर से एक चपत मारी।

खरगोश का हाथ कोलतार से चिपक गया। उसने हाथ छुड़ाने के लिए बहुत जोर लगाया पर हाथ नहीं छूटा।

उधर बाड़ में छिपी लोमड़ी यह सब देख रही थी। उसे खरगोश को फँसा देखकर बड़ा मजा आ रहा था।

"अरे भई, मुझे छोड़ भी दो।" खरगोश चिल्लाया, "नहीं तो मैं तुम्हें एक तमाचा और मारूँगा।" पुतले

ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

खरगोश ने गुस्से में आकर दूसरे हाथ से उसे जोर का तमाचा मारा। उसका दूसरा हाथ भी कोलतार से चिपक गया। लोमड़ी छिपकर देखती रही और हँसती रही।

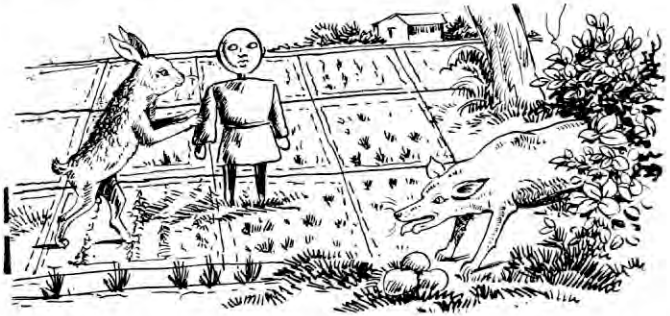

"मैं कह रहा हूँ, मुझे छोड़ दो। नहीं तो अब ऐसी जोर की लात मारूँगा कि याद करोगे।" खरगोश ने कड़क कर कहा। पुतला फिर भी चुप।

खरगोश ने उसे जोर की लात मारी। अब उस की टाँग भी फंस गई।

उसने टाँग छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर टाँग और भी चिपकती चली गई।

"अपना भला चाहते हो तो अब भी मुझे छोड़ दो।" खरगोश चिल्लाया, "नहीं तो मैं तुम्हें दूसरी

लात मारूँगा।" किन्तु कोलतार के पुतले ने न तो कोई उत्तर दिया और न उसे छोड़ा।

लोमड़ी छिपी-छिपी देखती रही और हँसती रही।

खरगोश ने पुतले को जोर से दूसरी लात मारी और वह भी चिपक गई।

मैं अब भी कहता हूँ कि मुझे छोड़ दो। नहीं तो मैं तुम्हारे पेट में ऐसी जोर की टक्कर मारूँगा कि पता लग जाएगा।" खरगोश ने गुस्से और घबराहट के साथ चीखकर कहा।

पुतले ने न कोई उत्तर दिया और न छोड़ा। लोमड़ी देख-देखकर हँसती रही।

खरगोश ने पुतले के पेट में जोर की टक्कर मारी। अब उसका सिर भी चिपक गया।

लोमड़ी ने देखा कि अब खरगोश अच्छी तरह फंस गया है। वह बाड़ से बाहर निकल आई। खरगोश के पास जाकर कहने लगी, "खरगोश मियाँ! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" और वह जोर-जोर से हँसने लगी।

"लोमड़ी रानी! मुझे बचाओ। अब मैं कभी भी तुम्हारे बाग में नहीं आऊँगा।" खरगोश ने गिड़-गिड़ाते हुए कहा।

लोमड़ी मुसकराई। कहने लगी, "खरगोश मियां, तुम चोरी-चोरी मेरी गाजरें खा जाते हो। इस काले पुतले ने तुम्हें अच्छा पकड़ा है। चोर को सजा तो मिलनी ही चाहिए।"

खरगोश रो पड़ा। बोला, "अब कभी चोरी नहीं करूँगा। एक बार भूल हो गई। मुझे क्षमा कर दो। सच कहता हूँ, अब कभी भी चोरी नहीं करूँगा।"

लोमड़ी ने उसे छुड़ा दिया। फिर दोनों कान मरोड़ते हुए कहा, "अब कभी तुमने किसीकी चोरी की तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा।"

अभ्यास

1. लोमड़ी ने चोर का पता कैसे लगाया ?
2. चोर को पकड़ने के लिए लोमड़ी ने क्या किया ?
3. खरगोश ने पुतले से क्या कहा ?
4. खरगोश के चारों पंजे और सिर पुतले से कैसे चिपक गया ?
5. खरगोश ने लोमड़ी से क्या कहा ?
6. लोमड़ी ने खरगोश को क्या कहकर छोड़ा ?

असली राजकुमारी

एक था राजकुमार। राजकुमार जवान हो गया। राजकुमार ने कहा, मैं तो असली राजकुमारी से ब्याह करूँगा। वह असली राजकुमारी को ढूँढ़ने के लिए एक नगर से दूसरे नगर, दूसरे नगर से तीसरे नगर घूमने लगा। फिर इसी तरह घूमते-घूमते उसने कई देश घूम लिए। परन्तु उसको अपनी मनचाही राजकुमारी कहीं नहीं मिली। उसने कई राजकुमारियों को देखा पर किसी में कुछ और किसी में कुछ कमियाँ निकाल कर, उसने किसीसे भी ब्याह नहीं किया। राजकुमार उनको असली राजकुमारी मानने को तैयार नहीं था। वह जैसी राजकुमारी से ब्याह करना चाहता था, वैसी राजकुमारी उसे कहीं नहीं मिली। अन्त में वह निराश होकर अपने महल में लौट आया।

मनचाही राजकुमारी न मिलने से राजकुमार उदास रहने लगा। उसे न ठीक से भूख लगती और न नींद आती। वह कुछ दिनों में सूखकर दुबला हो गया। उसके चेहरे का रंग भी पीला पड़ गया।

उसकी रानी माँ और राजा पिता अपने बेटे को दिनों-दिन दुबला-पतला होता देखकर चिन्ता में डूब गए।

एक दिन बड़े जोर की आँधी आई। हवा से कई पेड़ उखड़ गए। बादल गर्जने लगे, बिजली चमकने लगी। इतने जोर से पानी बरसा कि चारों ओर पानी भर गया। जिधर देखो, उधर पानी, पानी ही पानी।

अचानक महल की बन्द ड्योढ़ी को किसीने खटखटा दिया। ड्योढ़ी पर पहरा देने वाले पहरेदारों ने ड्योढ़ी खोल दी। जब लालटेन के प्रकाश में उन्होंने देखा तो बाहर एक राजकुमारी खड़ी थी।

आँधी के कारण इस राजकुमारी का बुरा हाल था। पानी की बौछाड़ से वह बुरी तरह भीगी हुई थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। बालों की लटों से पानी टपक रहा था। उसके जूते कीचड़ से सने हुए थे। पर वह असली राजकुमारी थी। उसने पहरेदार से कहा, "मैं आँधी के कारण रास्ता भूल गई हूँ।"

द्वारपाल ने महलों में जाकर बताया कि ड्योढ़ी पर एक राजकुमारी आई हुई है। वह रास्ता भूल गई है और सहायता चाहती है।

राजकुमार ने भी यह बात सुन ली। वह सोचने लगा, "यह जरूर असली राजकुमारी होगी!"

राजकुमार की माता, रानी ने कहा, "तुम चलो, हम अभी आकर उस राजकुमारी को देखते हैं।"

रानी जाकर राजकुमारी को महल में ले आई। नहा-धोकर सिर के बालों को संवार कर और रानी के दिए सूखे कपड़े पहनकर राजकुमारी की जान में जान आई। रानी ने उसको बढ़िया भोजन खाने को दिया।

जब वह भोजन कर चुकी तो रानी ने कहा, "राजकुमारी, अब तुम सो जाओ। मैंने तुम्हारे लिए बढ़िया गुदगुदा बिछौना बिछा दिया है।"

रानी ने बड़े नरम-नरम दस गद्दे राजकुमारी के बिछौने में बिछाए थे। किन्तु उसने सबसे नीचे वाले गद्दे के नीचे एक मटर का दाना रख दिया।

सबेरे-सबेरे ज्यों ही राजकुमारी उठी तो रानी ने पूछा, "क्यों राजकुमारी, रात नींद तो खूब आई होगी?"

राजकुमारी ने खीझकर कहा, "मैं तो सारी रात करवटें ही बदलती रही। जरा भी नींद नहीं आई।"

रानी ने पूछा, "क्या बात हुई ? तुम्हें नींद क्यों नहीं आई ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ? कल पानी में भीगने से बुखार तो नहीं हो गया था ?"

राजकुमारी बोली, "नहीं जी, बुखार-वार तो कुछ नहीं हुआ पर बिछौने में ही कुछ गड़बड़ थी। मेरी आँख ज्योंही झपकने लगती, मुझे कुछ चुभने लगता। मेरी पसलियाँ मारे दर्द के दुःख रही हैं। पता नहीं कैसा बिछौने बिछाया था। रात भर मुझे कोई चीज चुभती रही।"

रानी ने कहा, "यह है असली राजकुमारी। यह कोई ऐसी-वैसी लड़की नहीं, असली राजकुमारी है, असली। एक दम असली! कैसा कोमल है इसका शरीर। दस गद्दों के नीचे रखा मटर का दाना भी उसे चुभता रहा। मैंने जान-बूझकर ही रखा था। यह पता लगाने के लिए कि राजकुमारी असली है या नकली। असली राजकुमारी को भला कहीं नींद आ सकती है, ऐसे बिछौने पर।"

राजकुमार ने सुना तो वह उछल पड़ा। उसने मन में कहा, यह हुई न बात! अब मिली असली राजकुमारी! अब होगा इससे मेरा ब्याह!

राजा को पता लगा तो उसकी प्रसन्नता का भी ठिकाना न रहा।

राजकुमार का ब्याह बड़ी धूमधाम के साथ इस असली राजकुमारी के साथ हो गया।

अभ्यास

1. राजकुमार कैसी राजकुमारी से ब्याह करना चाहता था ?
2. राजकुमार दुबला-पतला क्यों हो गया ?
3. वर्षा और आँधी वाली रात को ड्योढ़ी पर कौन आई और उसने क्या कहा ?
4. रानी ने राजकुमारी के लिए कैसा बिछौना बिछाया ?
5. राजकुमारी को रात भर नींद क्यों नहीं आई ?
6. असली राजकुमारी की पहचान के लिए रानी ने क्या किया ?

खिलौनों का पेड़

सैंकड़ों साल पुरानी बात है। बहुत दूर समुद्र के उस पार एक देश था। उसमें एक बढ़ई रहता था। उसका छोटा-सा परिवार था। पत्नी और दो बच्चे थे। हंस और गेरडा।

जंगल के किनारे एक झोंपड़ी में वे रहते थे। बढ़ई जंगल से लकड़ी काट लाता और छोटी-मोटी चीजें बनाकर गुज़ारा करता था। वह बड़ा मेहनती था और अच्छा कारीगर भी। वह लकड़ी के अच्छे-अच्छे खिलौने बना लेता था।

गर्मियों में हंस और गेरडा जंगल में चले जाते। कभी वृक्षों पर चढ़ते, कभी जंगली फल-फूल तोड़ते। कभी खरगोशों और गिलहरियों का तमाशा देखते रहते।

परन्तु सर्दियों में वहाँ बर्फ पड़ जाती। घर से बाहर निकलना कठिन हो जाता। घर में दिन-भर वे आग के पास बैठे तापते रहते। घर के भीतर ही खेल भी लेते। कभी उनकी माँ उन्हें कहानियाँ सुनाती। कभी वे एक-दूसरे से पहेलियाँ पूछते और बूझते।

एक बार बड़े दिन की साँझ को चारों जने आग के पास बैठे थे। बढ़ई लकड़ी के टुकड़े को छीलकर खिलौना बना रहा था। हंस की माँ उसके लिए मफलर बुन रही थी। दोनों बच्चे अपने खिलौनों से खेल रहे थे। वे आग से उड़ती चिंगारियों को देख कभी पीछे हटते तो कभी बिदक जाते।

बाहर कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। रूई के फाहों जैसी बर्फ गिर रही थी, धरती, मकानों की छतें और पेड़ों की टहनियां बर्फ की सफेद तह से ढकी हुई थीं। बर्फ के भार से वृक्षों की टहनियां झुक गई थीं। टहनियों पर जब बर्फ अधिक हो जाती तो वे भार से झुक पड़तीं और बर्फ के लोंदे नीचे गिर जाते। कभी कोई टहनी टूट भी जाती।

बढ़ई अपनी घरवाली से कह रहा था, "ऐसी ठंड में अगर कोई आदमी या जीव-जन्तु अपने घर से बाहर होगा तो उसकी क्या हालत होगी ?"

उसकी घरवाली ने कहा, "ऐसी ठंढ में कोई घर से बाहर रहकर कैसे बच सकता है !"

वे आपस में बात कर ही रहे थे कि दरवाजे पर हल्की-सी थाप सुनाई दी।

बढ़ई बोला, "कोई दरवाजे को खटखटा रहा है।"

पत्नी ने उत्तर दिया, "भला ऐसी ठंड में कौन किसी के घर जाएगा। मुझे तो लगता है कि हवा के तेज झोंके से किवाड़ हिले हैं।"

वे दोनों दरवाजे की ओर देख ही रहे थे कि इतने में फिर धीरे से किवाड़ खटखटाने की आवाज सुनाई दी। साथ ही उन्होंने किसीको बच्चे जैसी कोमल आवाज में कहते सुना, "भले लोगो! मुझे भीतर आने दीजिए। मैं ठंड में ठिठुर रहा हूँ और भूखा हूँ।"

"बाहर कोई पुकार रहा है?" गेरडा की मां ने कहा और झट दरवाजा खोलने चली गई।

जब उसने दरवाजा खोला तो सामने सरदी से ठिठुरता एक बालक खड़ा था। उसके दांत बज रहे थे और होंठ ठंड से नीले पड़ गए थे।

उसने कहा, "बेटे, भीतर आ जाओ। ऐसी ठंड में तुम घर से बाहर कहाँ भटक रहे हो ?"

उस बालक ने कोई उत्तर नहीं दिया। बढ़ई की स्त्री उसे भीतर ले आई और आग के पास बिठा दिया। वह उसके ठंडे हाथों और पैरों को मलने लगी जिससे वे गरम हो जाएं।

उस स्त्री ने फिर पूछा, "बेटे ! तुम कौन हो और ऐसी ठंड में कहां से आ रहे हो ?"

पर बालक ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह फिर मुस्करा दिया।

हंस और गेरडा थोड़ी ही देर में उस बालक के साथ घुल-मिल गए और बातें करने लगे। फिर सबने भोजन किया। इस अजनबी बालक को उन्होंने बड़े प्रेम से भोजन खिलाया।

जब सोने का समय हुआ तो हंस ने इस अजनबी बालक को अपने साथ सुला लिया। दोनों एक साथ सो गए और गहरी नींद में डूब गए।

जब आधी रात हुई तो अचानक हंस और गेरडा की नींद खुल गई। उन दोनों ने देखा कि खुले दरवाजें की ओर से सफेद प्रकाश की किरणें भीतर आ रही हैं। सारे घर में चमकीला प्रकाश फैला हुआ है। उन्होंने देखा कि वह अजनबी बालक उस प्रकाश में खड़ा है। उन्हें आकाश से आती बहुत ही मधुर स्वर की झंकार सुनाई दी।

हंस और गेरडा हैरान थे कि यह क्या क्या हो रहा है! हंस जो आँखें फाड़े इस विचित्र बालक को देख रहा था, बड़बड़ाया, "यह कौन है?"

"मैं शिशु ईसा हूं।" वह अजनबी बालक बोला।

यह सुनते ही हंस और गेरडा उसके आगे झुक गए। शिशु ईसा ने कहा, "आज रात तुम लोगों ने मुझे बड़ी कीमती भेंट दी है यह भेंट है आप का प्रेम और कृपा। अब मैं भी आप को एक भेंट देता हूँ। यह भेंट आप को सदा आज की रात की याद दिलाती रहेगी।"

तब वह शिशु ईसा वहां से निकलकर, चमकते प्रकाश की उन किरणों के बीच जंगल की ओर चल पड़ा। और तभी आकाश में मधुर स्वर का गुंजन कुछ अधिक होने लगा।

जल्दी ही वह शिशु ईसा जंगल की ओर से वापस

लौट आया। जब वह वापस आया। जब वह वापस आया तो उस के हाथों में एक देवदार वृक्ष था। उस ने उस वृक्ष को बढ़ई की झोंपड़ी के आगे लगा दिया। इसके बाद वह बोला, "तुम इस देवदार वृक्ष की अच्छी तरह देख-भाल करना। आज के दिन प्रतिवर्ष इस वृक्ष में तुम्हारे लिए तरह-तरह के उपहार लगा करेंगे। ये अच्छी-अच्छी चीजें, ये उपहार तुम्हें आज के दिन की याद दिलाया करेंगे।

दोनों बच्चों ने देवदार के उस छोटे पौधे को देखा। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया। उस की शाखाओं में तारे झिलमिलाने लगे। सुनहरे गेंद लटकने लगे। उसकी टहनियों में ऐसे-ऐसे बढ़िया खिलौने लगे जिन्हें सभी बालक लेना चाहते हैं।

हंस और गेरडा शिशु ईसा का धन्यवाद करने के लिए पीछे मुड़े परन्तु वह तो उनकी आँखों

से ओझल हो चुका था। चमकीले प्रकाश की जो किरणें फैली हुई थीं, वे भी धीरे-धीरे छिप गईं। संगीत की जो मधुर ध्वनि गूंज रही थी वह भी बन्द हो गई।

तब हंस और गेरडा अपने माता-पिता को जगाने के लिए दौड़े। जब वे जाग गए तो दोनों बच्चों ने सारी बात उन्हें सुनाई।

तब से लेकर प्रतिवर्ष बड़े दिन का यह त्यौहार मनाया जाता है और ईसा के भक्त अपने घरों में देवदार वृक्ष बनाते हैं। फिर वे उसकी टहनियों के साथ बच्चों के लिए तरह-तरह के उपहार लटकाते हैं।

अभ्यास

1. बढ़ई के परिवार में कितने लोग थे ?
2. बढ़ई कहां रहता था ?
3. बड़े दिन की सांझ को क्या हुआ ?
4. आधी रात को नींद खुल जाने पर हँस और गेरडा ने क्या देखा ?
5. अजनबी बालक ने हंस और गेरडा से क्या कहा ?
6. जंगल से लौटने पर बालक के हाथ में क्या था और उसने क्या कहा ?
7. बड़ा दिन कब होता है ? किस ऋतु में ?

चालाक गीदड़

गंगा के किनारे महावन में एक गीदड़ रहता था। उसका नाम था मोती। मोती बड़ा चालाक था। सारे गीदड़ उसे अपना सरदार मानते थे। जंगल के और जानवर भी उसका आदर करते थे। अपना काम निकालने के ऐसे-ऐसे तरीके वह जानता था कि क्या कहने !

एक दिन वह भोजन की खोज में जंगल में इधर से उधर घूम रहा था। एक बड़े गड्ढे में उसे हाथी पड़ा दिखाई दिया। उसने हाथी के चारों ओर चक्कर काट कर देखा। हाथी मरा हुआ था। यह एक बूढ़ा हाथी था और गड्ढे में गिर कर मर गया था।

गीदड़ को कई महीनों के लिए बढ़िया भोजन मिल गया था। वह बड़ा प्रसन्न था। उसने पेट पर से हाथी की खाल को काटना चाहिए। पर हाथी की

मोटी खाल को अपने छोटे दाँतों से वह काट नहीं सका। वह सोचने लगा कि अब क्या करूँ। इतने में एक शेर वहाँ आ निकला।

गीदड़ ने सोचा, यह शेर इस हाथी को खाने आया है। इससे झगड़ा तो किया नहीं जा सकता। यहाँ नम्रता से काम निकालना चाहिये। उसने शेर को झुककर नमस्कार किया। फिर बोला, "मालिक! मैं तो तुम्हारा चौकीदार हूँ। यह हाथी पड़ा है न! मैं यहाँ पहरा दे रहा हूँ। आप इसे मजे से खाइये। यह तो आपके ही खाने योग्य है।"

शेर बोला, "ओ गीदड़ के बच्चे! खबरदार जो फिर कभी ऐसी बात कही। मैं शेर हूँ शेर। शेर अपने आप मारकर

खाता है। मरे हुए को या दूसरे के मारे हुए को नहीं खाता। तुम गीदड़ हो। तुम खा सकते हो। खाओ और मौज उड़ाओ।"

गीदड़ बोला, "मालिक! मैं तो आपका नौकर हूँ। हम तो आपके ही सहारे जीते हैं। आपकी आज्ञा है तो मैं इसे खाऊँगा।"

गीदड़ ने एक बार फिर झुककर शेर को प्रणाम किया। शेर वहाँ से चला गया।

गीदड़ ने मन में सोचा, अच्छा हुआ बला टली। पर थोड़ी देर बाद ही एक बाघ वहाँ आ निकला। गीदड़ ने सोचा, पता नहीं आज सबेरे किसका मुँह देखा है। एक बला किसी तरह टली थी तो दूसरी आ गई। उसको तो चापलूसी करके टरका दिया। अब इसे कैसे चलता करूँ। इससे झगड़ा तो किया नहीं जा सकता।

इतने में उसने एक उपाय सोच लिया। वह अकड़ के साथ बाघ के सामने गया और बोला, "मामा राम-राम ! यदि आप अपना भला चाहते हो तो यहाँ से चलते बनो। वह देखो, शेर ने हाथी मारा हुआ है। वह मुझे इस हाथी की लाश की रखवाली के

लिए छोड़ गया है। वह पास ही नदी में नहाने गया है। अभी आता ही होगा। वह मुझे कह गया है कि कोई बाघ इधर आए तो मुझे चुपचाप पता दे देना। मैं इस जंगल में एक भी बाघ जीवित नहीं छोड़ूँगा। जानते हो शेर सब बाघों पर क्यों बिगड़ा हुआ है? बात यह है कि कुछ दिन पहले भी शेर ने एक हाथी मारा था। मरे हुए हाथी को योंही छोड़कर शेर नहाने-धोने चला गया। पीछे से कोई बाघ आया और उसने हाथी को खाना शुरू कर दिया।

फिर जब उसने नहा-धोकर आते शेर को देखा तो चुपचाप भाग गया।

शेर जब हाथी को खाने के लिए तैयार हुआ तो देखा कि इसे तो कोई पहले ही थोड़ा-सा खा गया है। अब इस जूठे माँस को शेर कैसे खा सकता था। उसे बाघ पर बड़ा क्रोध आया। शेर ने बाघ को इधर-उधर ढूँढा पर वह तो दूर भाग गया था। बस, उस दिन से शेर सारे बाघों का शत्रु बन गया है। कहता है कि जो भी बाघ मेरे हाथ लग गया, उसे ही मार डालूँगा।"

गीदड़ की बात सुनकर बाघ मारे डर के काँपने लगा। बोला, "प्यारे भानजे! अब तो तू हीमुझे शेर से

बचा सकता है। मैं अभी यहाँ से सिर पर पाँव रख कर भागता हूँ। बस, मेरे ऊपर इतनी कृपा जरूर करना कि जब शेर आए तो उसे यह मत बताना कि यहाँ बाघ आया था। अच्छा, धन्यवाद ! मैं चला। अब कभी इधर नहीं आऊँगा।" यह कहकर बाघ वहाँ से नौ दो ग्यारह हुआ।

बाघ आँखों से ओझल हुआ ही था कि एक चीता आ धमका। गीदड़ फिर चिन्ता में डूब गया। अकल का वह तेज था ही। इस चीते से निपटने का उपाय भी उसने सोच लिया।

वह चीते से बोला, "आ भई भानजे ! बहुत दिनों बाद दिखाई दिए। कहाँ रहते हो आजकल ? तुम्हारा चेहरा देखकर ऐसा लगता है, जैसे कई दिनों के भूखे हो। इस समय तुम मेरे मेहमान हो। अच्छा, सुनो। यह देखो, शेर का मारा हुआ हाथी पड़ा है। शेर इस की रखवाली के लिए मुझे कह गया है। वह अभी कुछ देर बाद आएगा। तब तक तुम पेट भर कर हाथी का माँस खा सकते हो।"

चीता शेर का नाम सुनते ही घबरा गया। बोला, "गीदड़ मामा, मैं नहीं खाता हाथी का माँस। कहीं शेर ने देख लिया तो वह मुझे कच्चा ही खा जाएगा। जान है तो जहान है। ऐसे खतरे का काम नहीं करूँगा।"

गीदड़ को तो उससे अपना मतलब निकालना था। वह चाहता था कि चीता अपने लम्बे और तीखे दाँतों से हाथी की खाल को फाड़ दे तो मेरा काम बन जाएगा।

गीदड़ बोला, "अरे भानजे! इतना क्यों डर रहा है? जब मैं कह रहा हूँ तो डर किस बात का? शेर अभी दूर ही होगा, तभी मैं तुम्हें बता दूंगा कि अब चलता बन।"

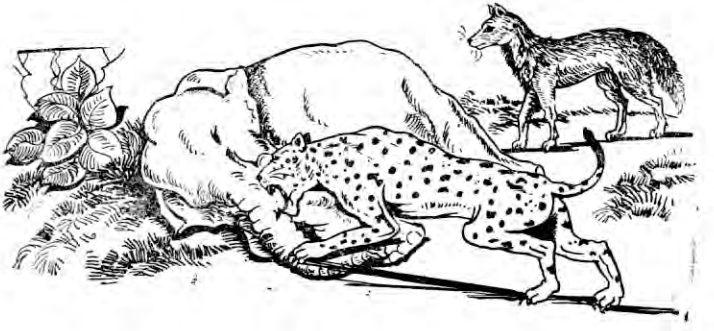

गीदड़ के समझाने-बुझाने से चीता रुक गया। उसने अपने तीखे दाँतों और पंजों से हाथी की खाल को फाड़कर उसका माँस खाना शुरू कर दिया।

गीदड़ ने देख लिया कि मेरा मतलब पूरा हो गया। बस, फिर क्या था! उसने चीते से कहा, "अरे भानजे! भाग। शेर आ रहा है।"

यह सुनते ही चीता लम्बी-लम्बी छलाँगें भरता हुआ भाग गया।

अब गीदड़ हाथी को खाने लगा। उसने अभी थोड़ा-सा माँस खाया था कि एक और गीदड़ आ टपका।

गीदड़ ने मन में कहा, 'एक बला को टालता हूँ कि दूसरी आ जाती है। आज सभी इधर भागे चले आ रहे हैं। अब इस चौथे शत्रु से भी निपटना पड़ेगा।'

दूसरा गीदड़ उधर से आ ही रहा था कि इसने उसके ऊपर हमला बोल दिया। अचानक के इस हमले से वह गीदड़ घबरा गया और भाग खड़ा हुआ।

अब तो इस गीदड़ के मजे हो गए। वह कई दिनों तक पेट भर कर हाथी का माँस खाता रहा।

अभ्यास

1. मोती कैसा गीदड़ था ?
2. जंगल में घूमते हुए गीदड़ को क्या मिला ?
3. शेर के आने पर हाथी ने क्या कहा ?
4. बाघ से गीदड़ ने क्या कहा ?
5. गीदड़ ने बाघ को क्या कहानी सुनाई ?
6. चीते से गीदड़ ने क्या कहा ?
7. चीते को गीदड़ ने हाथी का माँस क्यों खाने दिया ?
8. गीदड़ ने दूसरे गीदड़ को कैसे भगाया ?

लाली

पुराने ज़माने की बात है। एक थी लड़की। उसकी माँ ने उसे लाल रंग का एक चोगा बना दिया। चोगे के रंग का ही लाल दुपट्टा भी ले दिया।

उस लड़की को यह लाल चोगा और लाल दुपट्टा बहुत अच्छा लगता। वह सदा उसे ही पहने रहती। इन लाल कपड़ों के कारण लोगों ने उसका नाम लाली रख दिया। घर और बाहर के सभी लोग उसे 'लाली' नाम से पुकारते।

एक दिन की बात है। त्यौहार के दिन उसकी माता ने बढ़िया-बढ़िया पकवान पकाए। एक टोकरी में उन्हें रखा। लाली की दादी पास के ही दूसरे गाँव में रहती थी। उसने पकवानों की टोकरी लाली के हाथ में देते हुए कहा, "लाली बेटी ! जाओ, पकवान अपनी दादी जी को दे आओ।"

लाली दादी जी के पास जाने के लिए झट तैयार हो गई। दादी उसे बहुत चाहती थी। वह लाली को अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाती थी और अच्छी-

अच्छी चीजें खाने को देती थी।

माँ ने कहा, "लाली, रास्ते में इधर-उधर खेलने मत लग जाना। सीधी दादी जी के पास पहुँचना। रास्ते में जंगल है। सावधान होकर जाना।"

लाली ने कहा, "माँ जी, चिन्ता मत कीजिए। मैं सीधी दादी जी के पास जाऊँगी।"

लाली पकवानों की टोकरी उठाकर चल पड़ी। गाँव से बाहर निकलते ही वह भूल गई कि मैं माँ के साथ क्या कह आई हूँ। रास्ते के किनारे जंगली

झाड़ियों में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। इन सुन्दर फूलों को देखकर उसका मन ललचा गया। वह टोकरी एक ओर रखकर फूल तोड़ने लगी। फिर ज्योंही आगे बढ़ी तो दूसरे रंग के फूल दिखाई दिए। वह फिर उन्हें तोड़ने के लिए रुक गई। कुछ और आगे बढ़ी तो झड़बेरी में लाल-लाल बेर दिखाई दिए। वह फिर टोकरी रखकर बेर तोड़ने लगी।

झड़बेरी की झाड़ी में बहुत काँटे होते हैं। बेर तोड़ते समय उसका चोगा काँटों में उलझ गया। वह उसे छुड़ाने लगी तो वह फट गया।

इस तरह उसे और भी देर हो गई। थोड़ा आगे चलने पर उसे डाल पर बैठी कोयल दिखाई दी।

कोयल अपनी मीठी बोली में कूक रही थी। लाली देर तक कोयल की कूक सुनती रही। फिर उसके मन में विचार आया कि मुझे देर हो रही है। चलना चाहिए। वह कुछ दूर और गई थी कि एक मोर उसे पंख फैलाए नाचता दिखाई दिया। उसके पास दो-तीन मोरनियाँ भी थीं। मोर के नाच को देखकर वह फिर रुक गई। देर तक वह

उसे नाचते देखती रही।

जब मोर का नाच बन्द हुआ तो वह फिर टोकरी उठाकर चल पड़ी।

अब तक दिन ढल चुका था। पेड़ों की छाया लम्बी हो गई थी। दूर पर्वत की चोटियों पर डूबते सूर्य की धूप दिखाई दे रही थी।

अब लाली को अपनी भूल मालूम हुई। अभी तक उसे दादी जी के पास पहुँच जाना चाहिए था। बढ़ते हुए अँधेरे को देखकर वह डरने लगी। पर अब क्या हो सकता था।

इतने में सामने से आता हुआ एक भूरा भेड़िया उसे दिखाई दिया।

अब वह क्या करे, कहाँ जाए। उसने साहस से काम लिया। वह जानती थी कि डरने से कोई लाभ नहीं होगा।

भेड़िये ने पास आकर कहा, "नमस्ते लाली जी!"

लाली ने भी नमस्ते का उत्तर—'नमस्ते' कह कर दिया।

भेड़िये ने पूछा, "तुम इस समय कहाँ जा रही हो?"

"मैं अपनी दादी जी के पास जा रही हूँ। आज त्यौहार का दिन है। माँ जी ने उनके लिए पकवान भेजे हैं।" लाली ने उत्तर दिया।

जब लाली यह बात कह रही थी तो भेड़िया जीभ से अपने होंठ चाट रहा था। उसने पूछा, "तुम्हारी बुढ़िया दादी कहाँ रहती हैं?"

"पास वाले इस गाँव में! दाईं ओर को गाँव के परले कोने में उनका घर है।" लाली ने समझाते हुए कहा।

यह सुनते ही भेड़िया वहाँ से चम्पत हुआ। वह सीधा लाली की दादी के घर पहुँचा। उसने धीरे से दरवाजा थपथपाया।

भीतर से बुढ़िया ने पूछा, "कौन है?"

"मैं लाली हूँ, तुम्हारी पोती!" भेड़िये ने अपनी आवाज को महीन बनाकर धीरे से कहा।

बुढ़िया ने कहा, "भीतर आ जा और दरवाजा बन्द कर दे ताकि कोई कुत्ता-बिल्ला न घुस आए।"

भेड़िये ने भीतर घुसते ही बुढ़िया को दबोच लिया। बेचारी कमजोर बुढ़िया भेड़िये का सामना कैसे करती!

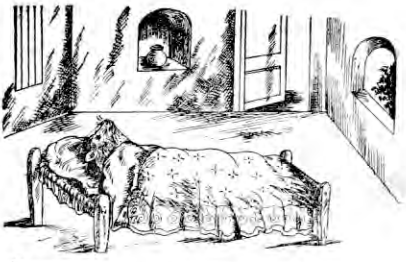

बुढ़िया को ठिकाने लगाकर वह उसके बिस्तर पर रजाई ओढ़ कर लेट गया। अपने सिर को उसने बुढ़िया के दुपट्टे से ढक लिया।

उधर साँझ होते देखकर लाली भी जल्दी-जल्दी चलने लगी। उसे डर था कि कोई और भेड़िया न आ जाए। वह हाँफती हुई दादी के दरवाजे पर जा पहुँची।

उसने दरवाजा थपथपाया।

"कौन है ?" भेड़िये ने धीरे-से रजाई के बीच सोए-सोए पूछा।

"दादी जी ! मैं लाली हूँ।"

"भीतर चली आ और दरवाजा बन्द कर दे।" भेड़िये ने कहा।

जब लाली भीतर गई तो उसने देखा कि दादी के बिछौने में भेड़िया लेटा हुआ है। वह जान गई कि यह वही भेड़िया है जो रास्ते में मिला था। उसने मन में सोचा, हिम्मत हारने से काम नहीं चलेगा। इस समय समझदारी से काम लेकर अपनी जान बचानी चाहिए।

लाली बोली, "दादी जी आपकी आँखें कैसी बड़ी-बड़ी दिखाई दे रही हैं ?"

"बिटिया, मैं तुझे अच्छी तरह देखने के लिए आँखें फैलाए हुए हूँ।" भेड़िये ने दादी बनते हुए कहा।

"दादी माँ ! आपके कान कितने बड़े-बड़े हैं। पहले तो ऐसे नहीं थे। नहीं थे न ?"

"प्यारी बिटिया ! तुम्हारी मीठी-मीठी बातें सुनने के लिए ही मेरे कान बड़े हो गये हैं।" भेड़िये ने कहा।

"अच्छा, यह बात है ! पर आपके ये दाँत क्यों इतने लम्बे हो गए हैं ?"

"तुम्हें खाने के लिए !" अब तो भेड़िया अपने असली रूप में प्रकट हो गया। वह उछलकर बिछौने से नीचे कूद पड़ा और लाली पर झपटा। लाली चीख पड़ी।

इतने में लाली की चीख-पुकार सुनकर पास-पड़ोस के लोग सहायता के लिए दौड़ पड़े। वे भीतर घुस आए। उनके हाथ में कुल्हाड़े थे। उन्होंने कुल्हाड़ों से इस शैतान भेड़िये का पेट फाड़ डाला।

बुढ़िया दादी भेड़िये के पेट से जीती जागती

निकल आई। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसे नींद की झपकी कैसे आ गई। जैसे ही बूढ़ी दादी जागी, आकाश के बादल छँट गये और कमरा फिर सूर्य के प्रकाश से जगमगा उठा। लाली दौड़कर दादी की छाती से लिपट गई। उन्होंने सहायता करने वाले लकड़हारों को भोजन के लिए आमंत्रित किया और लाली द्वारा लाया हुआ स्वादिष्ट भोजन तथा दादी के बाग के मीठे फल खिलाए। भोजन करके लकड़हारे भेड़िए की खाल लेकर खुशी-खुशी अपने घर लौट गए। इस घटना के बाद जब कभी लाली अपनी दादी के पास जाती तो रास्ते में फूल आदि तोड़ने में देर न लगाती वरन तेजी से भागती जाती।

अभ्यास

1. लड़की का नाम 'लाली' कैसे पड़ा ?
2. लाली की दादी कहाँ रहती थी ?
3. लाली की माँ ने दादी के लिए क्या दे भेजा ?
4. लाली की माँ ने क्या कहकर भेजा ?
5. लाली रास्ते में क्या करने लगी ?

6. लाली की दादी के घर जाकर भेड़िये ने क्या किया ?

7. दादी के घर जाकर लाली ने क्या देखा ?

8. भेड़िये को किसने मारा ?

सोई हुई राजकुमारी

एक था राजा, एक थी रानी। उनके पास सभी चीजें थीं, पर फिर भी सुखी नहीं थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। बड़ी उमर में उनके यहाँ एक लड़की पैदा हुई।

राजा की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। सारी प्रजा राजकुमारी के जन्म की बधाई देने आई। राजा ने भी प्रसन्नता के इस अवसर पर बहुत बड़े भोज की तैयारी की। छः परियाँ भी इस भोज में बुलाई गईं। छहों परियाँ इस छोटी बच्ची को अपनी शुभकामनाएँ देने आईं।

पहली परी ने कहा, "मैं राजकुमारी को सुन्दरता का वरदान देती हूँ। इस दुनिया में इससे अधिक सुन्दर कोई नहीं होगा।"

दूसरी परी ने कहा, "मैं उसे बहुत ही समझदार होने का वरदान देती हूँ। वह जितनी सुन्दर होगी, उतनी ही समझदार भी।"

तीसरी परी ने कहा, "मैं वरदान देती हूँ कि इसकी बोली में कोयल की बोली जैसी मिठास होगी।"

चौथी ने कहा, "यह हँसेगी तो जैसे फूल झरेंगे।"

पाँचवीं ने कहा, "मैं यह वरदान देती हूँ कि राजकुमारी की चाल ऐसी होगी, जैसे हंस की चाल होती है। जैसे पक्षी हवा में उड़ते हैं, ऐसी चाल।"

पाँच परियों ने ये पाँच वरदान दिए ही थे कि तभी राजा के महल के ऊपर एक काली छाया मँडराने लगी। जिस बड़े कमरे में यह समारोह हो रहा था, वहाँ धुंध-सी छा गई। कमरे में एक परी आई। सच तो यह है कि वह परी नहीं, चुड़ैल थी, जादूगरनी थी। वह जहाँ कहीं भी जाती थी, अपने साथ बुराइयाँ ले जाती थी। राजा ने उसे इस समारोह में बुलाया भी नहीं था। इसलिए वह चिढ़ी हुई थी। वह बोली, "अब मेरा शाप भी सुन लो, राजकुमारी के सोलहवें जन्म-दिन पर उसकी उँगली में तकली चुभ जाएगी और वह मर जाएगी।"

ज्योंही उस चुड़ैल ने यह कहा, रानी रोने लग पड़ी। राजा का चेहरा यह बात सुनते ही सफेद पड़ गया, जैसे उसे पाला मार गया हो। वहाँ जितने लोग थे, सभी के चेहरों पर उदासी छा गई। परन्तु बड़े भाग्य की बात यह हुई कि छः परियों में से छठी ने

अभी अपना वरदान नहीं दिया था। वह राजकुमारी के पालने के ऊपर झुक गई। वह बोली, "अभी-अभी जो शाप दिया गया है, मैं उसे तो नहीं रोक सकती, किन्तु उसे दूसरे रूप में बदल सकती हूँ। जब राजकुमारी की उँगली में तकली चुभ जाएगी तो राजकुमारी मरेगी नहीं, अपितु वह सौ साल के लिए गहरी नींद में सो जाएगी।"

उसी समय राजा ने अपने अधिकारियों को आज्ञा दी कि राज्य-भर में जितने भी चरखे और तकलियाँ हैं, उन्हें नष्ट कर दिया जाए। राजा ने सोचा कि जब सारे राज्य की तकलियाँ नष्ट कर दी जाएँगी तो राजकुमारी के हाथ में तकली कैसे चुभ सकती है?

राजा के अधिकारियों ने तुरंत राजा की आज्ञा का पालन किया। सारे राज्य में तकलियाँ नष्ट कर दी गईं।

राजकुमारी दिनोंदिन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ने लगी। वह बड़ी सुन्दर और बहुत समझदार थी। सभी उसे चाहते थे। वह महल में जिस ओर जाती, वहीं प्रकाश हो जाता। वह बोलती तो लगता जैसे कोयल कूक रही हो। वह नाचती

तो ऐसा लगता जैसे कोई स्वर्ग की परी धरती पर उतर आई हो। वह गाती तो जैसे कोई सितार बजा रही हो।

जब राजकुमारी का सोलहवाँ जन्म-दिन आया तो उसने राजा से कहा, "मुझे बाग के एक-एक कुंज और महल के एक-एक कमरे को अकेले देखने की आज्ञा दीजिए।"

राजा ने उसे आज्ञा दे दी। वह महल में घूमने लगी। महल बड़ा लम्बा-चौड़ा था। उसमें सैकड़ों कमरे थे। राजकुमारी सब जगह घूमकर अन्त में एक ऊँचे बुर्ज के छोटे दरवाजे के पास पहुँची। उसने दरवाजा खोला और चक्करदार सीढ़ियों पर चढ़ती हुई बुर्ज में ऊपर जा पहुँची। यह एक छोटा-सा कमरा था। इसमें एक सीखचों वाली खिड़की थी।

उस खिड़की के पास बैठी एक बुढ़िया चरखा कात रही थी।

चरखे की घूँ-घूँ, रूई का धागा बनना और उसका तकले से लिपटता जाना राजकुमारी ने पहले कभी नहीं देखा था। उसे यह सब पहली बार देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने चरखा चला रही बुढ़िया से इसके बारे में पूछा।

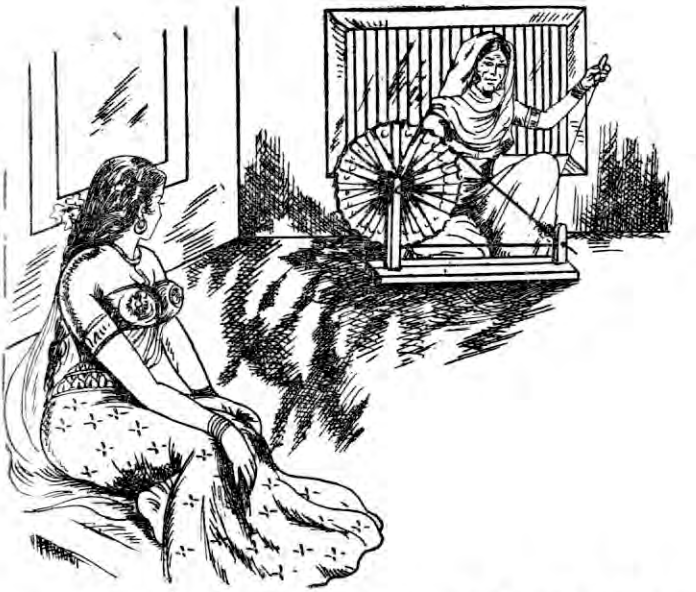

बुढ़िया ने बताया कि यह चरखा है। इससे सूत कातते हैं। और सूत से कपड़ा बनता है।

राजकुमारी ने कहा, "अम्माँ, मुझे भी चरखे पर सूत कातना सिखा दो।"

बुढ़िया बोली, "जरूर सिखाऊँगी। आओ, यहाँ बैठो। इसको यहाँ से पकड़कर घुमाओ और पोनी को यों हाथ में पकड़ो।"

राजकुमारी बैठकर ज्योंही पोनी पकड़कर चरखा चलाने लगी, तकली उसकी उँगली में चुभ गई और

वह उसी समय गहरी बेहोशी जैसी नींद में सो गई।

चरखा कातने वाली यह बुढ़िया, वही चुड़ैल थी जिसने राजकुमारी को शाप दे रखा था। वह तुरन्त ओझल हो गई।

इस समय अपने-अपने सिंहासन पर बैठे हुए राजा और रानी भी गहरी नींद में डूब गए। रसोई-घर में रसोइया भी इसी तरह नींद में डूब गया। घुड़-साल में खड़े घोड़ों की भी यही हालत हुई। सारे महल में जहाँ जो चीज जिस हालत में थी, वह उसी हालत में रह गई। सारे महल में गहरी चुप्पी छा गई। हर चीज पत्थर की सुन्दर गढ़ी हुई मूर्ति जैसी दिखाई देती थी। कोई भी वस्तु जीवित नहीं लगती थी।

महल के चारों ओर काँटेदार झाड़ियाँ उग आईं। ये झाड़ियाँ इतनी घनी थीं कि कोई भी भीतर नहीं जा सकता था। कभी कोई चरवाहा अपने जानवरों को लेकर इधर आ निकलता था, कभी कोई शिकारी शिकार की खोज में उधर आ जाता। जब वे लोग भीतर घुसने के लिए कुछ झाड़ियों को काटते तो आगे और भी घनी झाड़ियाँ होने पर वापस लौट जाते।

इसी तरह दिन, महीने और वर्ष बीतते गए। लोग इस महल की बात को और इस घटना को धीरे-धीरे भूलते गए। इस तरह एक युग बीत गया।

किन्तु एक दिन प्रातः पास के राज्य का एक राजकुमार घोड़े पर चढ़ा हुआ उधर से निकला। उसने ऊँची-ऊँची झाड़ियों से घिरी इस जगह को देखा तो पास ही सूअर चरा रहे एक बूढ़े आदमी से पूछा, "बाबा, क्या तुम बता सकते हो कि इन झाड़ियों के पीछे क्या है ?"

जब उस बूढ़े ने उस महल की और राजकुमारी की बात बताई तो राजकुमार ने अपना घोड़ा फिर पीछे को मोड़ लिया और महल के फाटक पर जा पहुँचा।

जब सूअर चरा रहे बूढ़े ने देखा कि यह सुन्दर राजकुमार इस भूतों के महल की ओर जा रहा है तो उसने पीछे से जोर की आवाज़ लगाई, "रुको ! रुको !! उधर मत जाओ। गुलाब के काँटों से छिद जाओगे। क्यों खामखाह मौत के मुँह में जा रहे हैं। रुको ! रुको !!"

परन्तु उसे यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ कि घोड़े पर चढ़ा हुआ राजकुमार उस काँटेदार गुलाब की

झाड़ियों को चीरता हुआ ऐसे निकल गया जैसे बाढ़ के पानी की लहर।

वह महल के आँगन में जा पहुँचा। वह राजमहल लगभग घने वृक्षों में छिपा हुआ था। महल के द्वारपाल अपने लम्बे चोगे पहने और भाले हाथ में लिए अपनी-अपनी जगह सोए हुए थे। अंगूर की बेलों ने उनके लोहे के टोपों को ढक लिया था।

दासियाँ अपनी-अपनी जगह बैठी ऐसी लग रही थीं, जैसे सपने देख रही हों। राजकुमार ने राजा और रानी को भी सिंहासन पर बैठे देखा।

वह सारे महल में घूम लिया पर राजकुमारी उसे कहीं भी दिखाई नहीं दी। अन्त में वह उस बुर्ज की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ ऊपर पहुँचा। वहाँ राजकुमारी सिरहाने पर अपने सुनहरे बाल बिखेरे सोई हुई उसे दिखाई दी।

राजकुमारी की सुन्दरता को देखकर राजकुमार की आँखें खुली की खुली रह गईं। वह राजकुमारी के सिरहाने बैठ गया और उसे इस तरह हिलाने-डुलाने लगा जैसे किसी को जगाते हैं।

तभी एक अनोखी बात हुई। सारे राजमहल में एक चमकीला प्रकाश फैल गया। काँटेदार गुलाब

की झाड़ियाँ ऐसी हो गईं जैसे किसी माली ने काट-सँवार दी हों। पेड़-पौधों पर रंग-बिरंगे पक्षी चहचहाने लगे। मुर्गियाँ अपने बाड़े में शोर मचाने लगीं। कुत्ते गुर्राने लगे और बिल्लियाँ दूध के लिए म्याऊँ-म्याऊँ करने लगीं। रसोईघर से कड़छी चलाने की आवाज आने लगी।

इतने में राजा भी सिर को हिलाता हुआ उठ खड़ा हुआ और रानी से कहने लगा, "महारानी, मुझे नींद की झपकी आ गई थी।"

राजकुमारी पहले ही जाग चुकी थी। वह राजकुमार को लेकर अपने पिता के पास पहुँची। उन दोनों की जोड़ी को देखकर राजा-रानी बहुत प्रसन्न हुए।

राजा अब तक जान गया था कि इस सुन्दर राजकुमार ने ही हमें दोबारा जीवन दिया है।

राजा ने राजकुमारी का विवाह बड़ी धूमधाम के साथ उस राजकुमार के साथ कर दिया। वे बड़े सुख से जीवन-भर साथ रहे।

अभ्यास

1. राजा ने भोज किसलिए दिया ?
2. छहों परियों ने राजकुमारी को क्या-क्या वरदान दिए ?
3. चुड़ैल ने राजकुमारी को क्या कहा ?
4. राजा ने सारे चरखे क्यों नष्ट करवा दिए ?
5. राजकुमारी गहरी नींद में कैसे सो गई ?
6. राजकुमार को महल का पता कैसे लगा ?
7. राजकुमार के महल में जाने पर क्या अनोखी बात हुई ?

बर्फ की देवी

एक थी विधवा स्त्री। उसकी थीं दो बेटियाँ। एक सुन्दर और दूसरी कुरूप। जो सुन्दर थी उसका नाम था सुमति। जो कुरूप थी उसका नाम था कुमति।

सुमति दिन-भर घर का काम करती रहती। चरखा कातती और कपड़े सीती। पास-पड़ोस के लोग भी सुमति की प्रशंसा करते। पर घर में उलटी बात थी। माँ सुमति के बदले कुमति को ज्यादा प्यार करती थी।

कुमति घर का कुछ भी काम न करती। दस बजे तक सोई रहती। उसकी बोलचाल भी ठीक नहीं थी।

एक दिन पड़ोस की स्त्रियों ने उनकी माँ से पूछ लिया, "आप सुमति से बढ़कर कुमति को प्यार करती हैं। इसका क्या कारण है ?"

विधवा बोली, "यह कुमति बड़े भाग्य वाली है। मुझे ज्योतिषी ने बताया है कि यह लड़की एक दिन रानी बनेगी, रानी।"

उसकी बात सुनकर पड़ोसिनों को हँसी आ गई। वे बोलीं, "जो दिन-भर घर का सारा काम करती है, आपकी आज्ञा मानती है, साथ ही सुन्दर और समझदार भी है, उसको तो आप कभी भी भला नहीं कहतीं। हमें तो यह बात अच्छी नहीं लगती है। ऐसा लगता है कि सुमति आपकी बेटी नहीं नौकरानी है। या फिर कुमति सगी बेटी है और सुमति सौतेली।"

पर विधवा पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा।

सुमति जब चौके-चूल्हे का काम समाप्त कर लेती तो उसे कातने, सीने या कुछ बुनने का काम दे दिया जाता।

एक दिन वह कुछ सी रही थी कि सूई उसके हाथ में चुभ गई। हाथ से खून निकल आया। उसने सूई खींचकर निकाल दी और खून से सना हाथ धोने कुएँ पर चली गई। हाथ धोते समय, दूसरे हाथ में पकड़ी हुई सूई कुएँ में गिर पड़ी।

जब माँ को सूई कुएँ में गिर जाने का पता लगा तो उसने सुमति को बहुत फटकारा। बोली, "मेरे पास दूसरी सूई खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। उस

सूई को कुएँ में से निकालकर लाओ। जब तक सूई लेकर नहीं आओगी, तुम्हें रोटी नहीं दूँगी।"

बेचारी सुमति रोती-रोती फिर कुएँ पर गई। वह कुएँ में झाँककर देख रही थी कि कुएँ में गिर पड़ी।

जब उसने आँखें खोलीं तो वह एक सुन्दर बाग में थी। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। हरे-भरे पौधे क्यारियों में बड़े सुन्दर लग रहे थे। पक्षी चहचहा रहे थे।

सुमति उठकर चलने लगी। चलते-चलते वह एक गलियारे में पहुँची। वहाँ उसे रोटियाँ पकाने की एक भट्ठी दिखाई दी। भट्ठी में से आवाज आई, "हमें निकालो, हमें जल्दी निकालो। हम पक चुकी हैं। जल्दी करो नहीं तो हम जल जाएँगी।"

सुमति ने इधर-उधर देखा, पर वहाँ कोई भी नहीं था। फिर वह भट्ठी के पास गई और उसमें से पकी हुई रोटियाँ निकालने लगी। सारी रोटियाँ उसने सँभाल कर वहीं रख दीं।

इसके बाद वह आगे बढ़ी। उसके सामने सेब का एक पेड़ खड़ा था। उसमें लाल सेब लगे हुए थे। पेड़ पर से आवाज आई, "हमें तोड़ लो। हम पक गए हैं। नहीं तोड़ोगी तो हम गल-सड़ जाएँगे।"

यहाँ भी उसे आस-पास कोई नहीं दिखाई दिया। वह पेड़ की डालों को झकझोरने लगी। पके हुए लाल-लाल सेब नीचे घास पर गिरने लगे। सुमति ने उन्हें बटोरकर एक जगह ढेर लगा दिया।

इसके बाद वह फिर आगे बढ़ी। आगे उसे एक छोटा-सा घर दिखाई दिया। घर की खिड़की में से एक बुढ़िया सुमति को

झाँक रही थी। बुढ़िया के बाल बिखरे हुए थे। उसके लम्बे-लम्बे दाँत देखकर तो सुमति डर गई।

खिड़की में से बुढ़िया बोली, "बिटिया रानी! डरो मत। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगी। इधर मेरे पास आओ।"

सुमति साहस करके बुढ़िया के पास चली गई। बुढ़िया ने उसे प्यार करते हुए कहा, "बिटिया रानी! तुम यहाँ मेरे पास रहो। घर का कुछ काम-काज कर दिया करना। यहाँ तुम्हें न तो किसी चीज़ की कमी रहेगी और न कोई तुम्हें कुछ कहेगा। मेरे पास रहोगी तो मेरा जी भी लगा रहेगा। हाँ, तुम्हें एक काम ध्यान से करना होगा। मेरे बिस्तर को अच्छी तरह झाड़ना-बिछाना होगा। मेरे बिस्तर से जो रोएँ झड़ेंगे न, उन्हीं से तो धरती पर बर्फ गिरेगी। यों समझ लो कि मैं धरती पर बर्फ गिराने वाली देवी हूँ।"

बर्फ की देवी की प्यार-भरी बातें सुनकर सुमति ने वहीं रहना शुरू कर दिया। वह बुढ़िया का सारा काम बड़े चाव से करती। बुढ़िया भी उसके काम-काज और बोलचाल से बहुत प्रसन्न थी। दोनों के दिन मज़े से गुज़रने लगे।

जब सुमति को वहाँ रहते कई दिन हो गए तो

उसे अपने घर की याद आने लगी। माँ के पास जाने को उसका मन करने लगा। यहाँ उसे बड़ा आराम था फिर भी माँ के पास जाने को वह तैयार हो गई। उसने बर्फ की देवी से अपने मन की बात बताई। बुढ़िया बोली, "तुम्हारा मन घर जाने को है तो जा सकती हो। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। यदि तुम फिर यहाँ आना चाहोगी तो मैं तुम्हें बुला लूँगी।"

फिर वह सुमति को पकड़कर एक कमरे के दरवाजे पर ले गई। दरवाजा खोलते ही सोने के सिक्कों की बौछार पड़ने लगी। सुमति इतना सारा सोना देखकर दंग रह गई। बर्फ की देवी ने कहा, "बिटिया रानी! तुम जितने सोने के सिक्के ले जाना चाहो, ले जाओ।" बुढ़िया ने कुएँ में गिरी हुई सूई भी उसे दे दी।

फिर बुढ़िया बोली, "अब पल-भर के लिए अपनी आँखें बन्द करो।"

सुमति ने आँखें बन्द कर लीं। फिर जब उसने आँखें खोलीं तो वह अपने घर के दरवाजे पर थी। इतने पर एक कौआ बोल पड़ा :

काँव काँव, काँव काँव।
अच्छी बिटिया लौटी गाँव॥

सुमति सीधी माँ के पास गई। पहले उसने वह सूई और फिर सोने के सिक्के माँ को दिए। माँ सोने के सिक्के पाकर बहुत प्रसन्न हुई। सुमति ने कुएँ में गिरने से लेकर घर लौटने तक की सारी कहानी माँ को सुनाई।

उसकी माँ ने सोचा, 'सुमति को सोने के सिक्के मिल सकते हैं तो मेरी कुमति को भी जरूर मिलेंगे।' उसने कुमति को सिखा-पढ़ाकर कुएँ में सूई फेंकने और फिर कुएँ में गिरने को कहा।

कुमति ने वैसा ही किया। कुएँ में गिरने के बाद जब उसकी आँख खुली तो वह एक बाग में थी। चलते-चलते वह भी रोटियों की भट्ठी के पास पहुँची। भट्टी से उसी तरह आवाज आई, "हमें निकालो। हम पक गई हैं। नहीं निकालोगी तो जल जाएँगी।"

पर कुमति वहाँ नहीं रुकी। उसने सोचा, 'जलती हैं तो जलें। मैं क्या करूँ? मैं अपने हाथ इस भट्ठी में काले नहीं करूँगी।'

वह आगे निकल गई। आगे सेब का पेड़ खड़ा था। आवाज आई, "हमें तोड़ो। हम पक गए हैं। नहीं तो गल-सड़ जाएँगे।"

कुमति ने मन में कहा, 'गल-सड़ जाओ। मेरी बला से।' आगे चलने पर उसे बुढ़िया दिखाई दी।

उसे तो सब बातों का पहले ही पता था। इसलिए वह डरी नहीं।

बर्फ की देवी ने उसे अपने पास बुलाया। उसे सब काम समझा दिया। पहले दिन तो कुमति ने खूब काम किया। इतना कि कुछ पूछो मत। वह जानती थी यह बुढ़िया उसे सोने के सिक्के देगी। पर धीरे-धीरे वह फिर आलसिन बन गई। देर से उठती। उसने बुढ़िया का बिस्तर झाड़ना भी बन्द कर दिया। इससे धरती पर बर्फ गिरना बन्द हो गया।

बर्फ की देवी ने नाराज होकर कहा, "तुम काम-काज ढंग से नहीं करती हो। मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है। तुम यहाँ से चली जाओ।"

कुमति ने सोचा, 'बस, अब सोने के सिक्के मिलने ही वाले हैं।'

बुढ़िया उसे भी कमरे के दरवाजे पर ले गई। ज्यों ही दरवाजा खोला, चिपचिपे राल की बौछार से कुमति लिथड़ गई। बुढ़िया ने कहा, "यही तुम्हारे काम का इनाम है।" फिर बुढ़िया ने उसे आँखें बन्द करने को कहा। वह भी अपने घर के दरवाजे पर आ पहुँची। तभी कौआ बोल पड़ा :

काँव काँव, काँव काँव।
गन्दी बिटिया लौटी गाँव॥

वह रोती हुई माँ के पास गई। माँ ने बड़ी कठिनाई से राल छुड़ाई।

कुछ दिनों बाद सुमति फिर बर्फ की देवी के पास लौट आई। वह फिर कभी अपनी माँ के पास नहीं गई।

अभ्यास

1. विधवा की दोनों बेटियों के क्या नाम थे और वे कैसी थीं ?
2. पड़ोसिनों ने विधवा से क्या कहा ?
3. सुमति कुएँ में कैसे गिरी ?
4. सुमति ने बाग में क्या-क्या देखा-सुना ?
5. बुढ़िया ने सुमति से क्या कहा ?
6. बुढ़िया ने सुमति को क्या दिया ?
7. कुमति ने सुमति की नकल क्यों की ?
8. बुढ़िया कुमति पर प्रसन्न क्यों नहीं हुई ?

□□□